नवगीत के प्रगतिशील संदर्भ

(डॉ. सरिता)

हिन्दी साहित्य में नवगीत धारा का उदगम पचास के दशक में हुआ। इरा समय जहाँ एक ओर हिन्दी गौत क्रमशः रूढिगत होने लगा था, वहीं दूसरी ओर प्रयोगवाद और नई कविता के आग्रह के कारण छंद, लय और गीत को पूर्णतः अप्रासंगिक ठटहरा दिया था। यद्यपि छायावादी गीतों की एक समृद्ध परम्परा नवगीत से पूर्व विद्यमान थी, परन्तु आरोपित भाववादी शैली और व्यक्तिकेन्द्रिता के आधिक्य के कारण वह अप्रासंगिक होती जा रही थी। सर्वप्रथम निराला ने ही हिन्दी गीत को एक नई दिशा दी. जिससे गीत के क्षेत्र में छायावादी व्यक्तिकेन्द्रिता का अतिक्रमण हुआ और गीत सामान्य जनजीवन के साथ जुड गया। बच्चन. अंचल और अन्य रोमानी गीतकारों की रचनाओं की प्रतिक्रिया में गीत का प्रतिबिम्ब दृष्टिगत होता है, जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान परिवेश में यथार्थ-बोध, समष्टि उन्मुखता, प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य के प्रति नवीन दृष्टि, समृद्ध सांस्कृतिक चेतना, जातीय अस्मिता के प्रति सजगता का भाव, शोषण, अन्याय जनित स्थितियों के प्रति आक्रोश, व्यंग्य, करूणा, समाज विकास की संभावना आदि प्रगतिशील तत्व नवगीत की प्रगश्शीलता के नियामक बने।

नवगीत वस्तुतः गीतों को जीवन के यथार्थ से परिचित कराने का एक कदम है-

देखा जा सकता है कि 'औंगनधर्मी' गीत अब सडक पर उतर आये हैं। गीतों में आम आदमी का यह

'इन्चाल्वमेंट गीतों को ठोस यथार्थ की भूमि पर अदस्थित करता है. जो समाज की प्रत्येक अनुभूति को स्वर देते हुए जीवन में व्याप्त आक्रोश, कुण्ठा, क्षोभ आदि. को प्रस्तुत करता है और संवेदना के व्यापक स्तरों को स्पर्श करता हुआ दिखाई देता है। गीतकारों को अनुभव हुआ कि कल्पना की रमणीयता से भी अधिक सुन्दर जीवन की सच्चाइयाँ हैं। प्रथम बार गीतकारों के सामने जनसामान्य की विसंगतियों ने सिर उठाया है। वीरेन्द्र मिश्र की यह काव्य पंक्ति 'दूर होती जारही है कल्पना, पास आती जा रही है जिंदगी' इस बात का प्रमाण है कि उस समय गीतकार के दृष्टिकोण में एक मौलिक परिवर्तन आने लगा था। अपनी प्रेमिका के आँसुओं की अपेक्षा उसे शोषित और पीड़ित जनता का दर्द तथा पीड़ा अधिक रूचिकर लगने लगी- नवगीत में जनजीवन की यंत्रणाओं के बडे ही कारूणिक चित्र मिलते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के 58 साल बाद भी जनजीवन के अमावों, दुखों, समस्याओं का अंत नहीं हुआ। इसका एकमात्र कारण यह है कि प्रगति क॑ लाभ से कुछ शक्तिशाली लोग ही लाभान्वित हुए। सामान्य जनजीवन को उन्नत बनाने के लिए सार्थक प्रयत्न नहीं किए गए। जिसके कारण यशथेष्ट लाभ से वे वंचित रहे। नवगीत काव्य राजनीति में व्याप्त स्वार्थपरता और सत्तालोलुपता की कदु निंदा करते हुए भारतीय जनता को सजग एवं सत्तर्क रहने क॑ लिए प्ररित करता हैं। यहापि भारत एक धर्म-निरपेक्ष लोकतांत्रिक देश है, परन्तु आज 'भी यहाँ जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, भाषा और क्षेत्रियटा के आधार पर भेदभाव किया जाता है। ऐसी विकट स्थिति को देखकर लगता है कि राजसत्ता भ्रष्ट, अपराध और अवसरवादी राजनेताओं का अड्डा बन गई है - इन भ्रष्ट नेताओं ने सपम्पूर्ण राष्ट्र को लूटकर अपना घर भर लिया है। अनैतिकता, मूल्यहीनता. निष्ठुरता, पदलोलुपता इनके जीवन का लक्ष्य बन गया है। आम आदमी न तो इनका विरोध कर पाने में समर्थ है और न इस स्थिति से बाहर आने में। नेता ही हमारे भाग्य विघाता बने हुए हैं और पुलिस दिन-रात इनकी रक्षा कर रही है. कैसी कवियों ने ऊपनी रचनाओं भ॑ इस अराजक और ऊपर छपूर्ण स्थिति का विस्तार वर्णन किया है' उनका मान-। है कि इस देश के कर्णधार जनता के प्रांते अपने कर्तव्य को भूल >पना हित साधने म॑ लगे हुए हैं। आम जनता का सत्ता से विश्वास उठ गया है। फलत राम्प्रदांयिक दंगे, हिंसा झातक, हत्या आदि के फारण अराजक का जरूर काट इनके पेट में उननः की महल का एच नजुद हैं, झत्तः इन लू: रें को डंक मारना और इनकी व्यदस्णा को बदलना जरूरी है -

नव्मीत में प्रेम और सौंदर्य का नए दगैेटकोण के साथ विच्ित किया गया है मी इराकी प्रगतिशीःलता परिच* देता ै। नवगीत ऊँदियों की प्रेमामिव्यक्ति सामान्य जनजीपत मे जुझ है इनका प्रेम फैवी-ऊँ टी अटटालिकाआ। में नहीं पनपता अपित एह ता खेत खलिहानों, दाग #भीचों में जापस ने सुख- दुख बॉलने से

घनाता है। पैरेन्द्र मिश्र की झलसा है छायानट धूप में, गोल पंचम 'खांपराम इल ब्घुदती, जैसा रच [ऑ में प्रेम और सौंदर्य के साचिक रूप की अभिव्यवित्त देखी जा सकतो है। प्रेम में बलिद'न को महत्व दंत हुए वे लिखत हैं विरेन्द्र मिश्र की भांति रदीन्द्र श्रमर ने भी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति प्राकृतिक उपादानों के माध्यम रो की है। प्रसाद के नारी के प्रति विस्मय भाव का साम्य रवीन्द्र भ्रमर की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है -
प्रेयमी के रानिध्य में कवि को संघर्षों, दुर्खो और पीड़ाओं से लडने की एक शक्ति मिलती है जो उसके प्रणय-अनुभवों कौ परिपक्वता प्रदान करती है बल्कि संपर्षशील जीवन में आगे बढ़ने फी प्रेरणा भी देती है -
ठाकुर प्रसाद सिंह ने 'वंशी और बादल में संथाली जनजातियों के सौंदर्य का अद्भूत वर्णन किया है जो हमें संथाली जातियों के व्यवहार और उनकी दैनिक क्रियाओं से भी परिचित कराता है। देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र भी 'तुम' गीत में प्रिया के रूप सौंदर्य का भव्य चित्रण करते हुए प्रेयसी को खूबसूरत गजल से उपमित करते हैं -
निष्कर्ष तौर कहा जा सकता है कि नवगीतकार की सौंदर्य चेतना प्रकृति के हर पहलू से जुडी है। नदी, जल, सागर, फूल, चांदनी, पेड, बाग-बगीचों से लेकर नीले आसमान पर चमकते इन्द्रधनुष तक में नवगीतकार ने सौंदर्य के उपमान तलाश किए हैं। नवगीतकारों की सौंदर्य-चेतना व्यक्तिक न होकर सामाजिक चेत्तना का प्रतिनिधित्व करती है।